महाकवि कालिदास की संस्कृत साहित्य को देन : मेघदूत के संदर्भ में

वाल्मीकि तथा व्यास के बाद विद्वत्समाज में सर्वप्रथम महाकवि के नाम से कालिदास ही प्रसिद्ध हैं। कवि में जितने गुण होने चाहिए वे सभी कालिदास में पूर्णरूप से विद्यमान हैं। इनकी नैसर्गिक रचना में भावानुकूल भाव रखने की अद्भुत कला है। प्रकृति का सूक्ष्म चित्रण और मानवहृदय के अन्तर्निहित भावों को व्यक्त करने में कालिदास को स्वतः सिद्धि प्राप्त है। मल्लिनाथ ने तो स्पष्ट कहा है —

"कालिदासगिरां सारं कालिदाससरस्वती
चतुर्मुखोऽथवा ब्रह्मा विदुर्नान्ये तु मादृशाः ॥"

कालिदास की कविता में प्रसादगुण की अगाधता, माधुर्य का मधुर सन्निवेश, कोमलकान्त पदावली, उपमा की अपूर्वता, अलङ्कारों की रमणीयता, छन्दों की छटा, और भावा-सौष्ठव आदि पर्याप्त मात्रा में रहने के कारण उनकी काव्यकला विश्वविख्यात बन गयी है। वास्तव में कालिदास की काव्यकला के सन्दर्भ में सहृदयों की बात ही क्या साधारण व्यक्ति को भी जैसा प्रसादगुण का रसास्वाद, रस और अर्थ की निर्दोषता, गुण और अलङ्कारों का चमत्कार मिलता है। ध्वनिकाव्य का उत्तम गुण व्यञ्जना व्यापार कालिदास के सभी ग्रन्थों में अनुस्यूत है।

अलंकार योजना —

'उपमा कालिदासस्य' — इस उक्ति के बाद यह कहना शेष नहीं रह जाता है कि कालिदास की उपमाएँ अलौकिक हैं। इन उपमाओं के मुख्य तत्व विविधता, लालित्य, अभिवृत्ति तथा अभिव्यञ्जना हैं। कालिदास की उपमाएँ कभी-कभी एकदम साधारण और कभी-कभी पूर्णतः दुरूह और अभिव्यञ्जनापूर्ण हो जाती हैं। ये उपमाएँ प्राकृतिक सुषमाओं से, मानव प्रकृति से, साहित्यों से, रीतियों से, रिवाजों से, विविध कलाओं से, बौद्धिक विचारों से अर्थात् जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से ली गई हैं लेकिन कालिदास का काव्य-कौशल प्रत्येक उपमा में दृष्टिगत होता है। यहाँ तक कि बौद्धिक विचारों से प्राप्त उपमाओं में भी कवि ने कान्ति और अर्थ का प्रदर्शन किया है। कालिदास की उपमाओं में से उनकी एक ही उपमा का विवरण देना यथेष्ट है जिसकी मौलिकता तथा प्रभाव के लिए कवि को एक उपनाम 'दीपशिखा कालिदास' भी दिया गया है —

"सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा।
नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूमिपालः॥"

लेकिन यह कहना न्यायोचित नहीं होगा कि कालिदास ने उपमा के अतिरिक्त किसी और तत्त्व का आधान ही नहीं किया है। कालिदास ने उपमा के अतिरिक्त अर्थान्तरन्यास, उत्प्रेक्षा, रूपक आदि अलङ्कारों का भी प्रयोग बहुत ही सफलता से किया है।

कालिदास ने अपने प्रिय अर्थान्तरन्यास अलङ्कार की योजना से विशेष चमत्कारपूर्ण सुभाषित या सूक्तियाँ प्रस्तुत की है:—

"इत्याख्याते पवनतनयं मैथिलीवोन्मुखी सा
त्वामुत्कण्ठोच्छ्वसितहृदया वीक्ष्य संभाव्य चैव।
श्रोष्यत्यस्मात्परमवहिता सौम्य। सीमन्तिनीनां
कान्तोदन्तः सुहृदुपगतः संगमात्किञ्चिदूनः॥"

मेघदूत सुन्दर उत्प्रेक्षाओं के उदाहरण से भरा पड़ा है—

"नेत्रा नीताः, सततगतिना यद्विमानाग्रभूमी-
रालेख्यानां स्वजलकणिकादोषमुत्पाद्य सद्यः।
शङ्कास्पृष्टा इव जलमुचस्त्वादृशा जालमार्गै-
र्धूमोद्गारानुकृतिनिपुणा जर्जरा निष्पतन्ति॥"

मेघदूत में उत्प्रेक्षा अलंकार के विधान का सौन्दर्य इस बात में है कि यह अलङ्कार इस गीतिकाव्य की विषयवस्तु के सर्वथा अनुरूप है।

वैदर्भी रीति —

डा० परमानन्द शास्त्री का कहना है — 'अभिव्यक्ति' की दृष्टि से कालिदास का अपना विशिष्ट स्थान है। वे वैदर्भी रीति के सर्वोत्कृष्ट कवि हैं। शैली की दृष्टि से जो सबसे बड़ी विशेषता उनमें पायी जाती है और वह है उसकी ध्वन्यात्मकता। थोड़ा कहकर बहुत कुछ छिपा लेना, और इस ढंग से छिपा लेना कि सहृदय व्यक्ति के अतिरिक्त अन्यत्र उसकी छाया न पड़े कालिदास का सबसे बड़ा गुण है —

"आधिक्षामां विरहशयने सन्निषण्णैकपार्श्वां।
प्राचीमूले तनुमिवकलामात्रशेषां हिमांशोः॥"

विरहजनित कृशता को सूचित करने के लिए

'अधिक्षामा' शब्द का प्रयोग किया गया है अतः तनुगिवकलामात्र हिमांशोः का प्रयोग केवल कृशता द्योतन के लिए नहीं किया गया है। कवि का तात्पर्य यह है कि जिस चन्द्रमा की एक कला चुँधली सी आभा लिए होती है इसी प्रकार यक्ष-पत्नी विरहजनित मलिनता से युक्त है।

प्रसादगुण संपन्न शैली —

कवि यदि अपने मन का भाव ऐसे शब्दों में कहे जिनका मतलब सुनने के साथ ही सुनने वाले की समझ में आ जाए तो ऐसा काव्य प्रसादगुण से पूर्ण कहलाता है। अतएव जिस काव्य में करुणार्द्र-सन्देश तथा प्रेमातिशयद्योतक बाते हैं उसमें प्रसादगुण की कितनी आवश्यकता है यह सहृदयजनों को बताना नहीं पड़ेगा। यही समझकर महाकवि कालिदास ने मेघदूत को प्रसादगुण से पूर्ण कर दिया है।

रस-परिपाक —

यों तो कालिदास ने अपनी रचना में स्थान-स्थान पर सभी रसों का सन्निवेश किया है पर ये प्रधान रूप से शृंगार रस के रसिक कवि हैं। इनकी रचनाएँ शृंगार रस से ओत-प्रोत हैं। इनके काव्यों में संभोग शृंगार का प्रकाशमान रूप तथा विप्रलम्भ शृंगार का करुणामय रूप पाठकों के हृदय को चमत्कृत कर देते हैं। मेघदूत में विप्रलम्भ तथा कुमारसंभव में सम्भोग शृंगार का प्राचुर्य है। लेकिन कालिदास ने संभोग शृंगार की अपेक्षा विप्रलम्भ शृंगार का समायोजन अधिक उत्कृष्टता से किया है —

"त्वामालिख्य प्रणयकुपितां धातुरागैः शिलाया-
मात्मानं ते चरणपतितं यावदिच्छामि कर्तुम्।
अस्रैस्तावन्मुहुरुपचितैर्दृष्टिरालुप्यते मे
क्रूरस्तस्मिन्नपि न सहते सङ्गमं नौ कृतान्तः॥"

कालिदास ने करुण रस का वर्णन भी अति स्वाभाविक ढंग से किया है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् में पति के घर जाती शकुन्तला का ऐसा मार्मिक चित्रण है कि विषयविमुख कण्व जैसे धीर महर्षि भी रोए बिना नहीं रह सकते। मेघदूत की यक्षिणी के विरह वर्णन में कालिदास ने अपना संचित करुण रसकोश ही लगा दिया है —

"तां जानीथाः परिमितकथां जीवितं मे द्वितीयं
दूरीभूते मयि सहचरे चक्रवाकीमिवैकाम् ।
गाढ़ोत्कण्ठा गुरुषु दिवसेष्वेषु गच्छत्सु बालां
जातां मन्ये शिशिरमथितां पद्मिनीं वान्यरूपाम् ।।"

प्रकृति-वर्णन —

साहित्य जगत् के समालोचक शेक्सपियर को अन्तर्जगत् का तथा कालिदास को बाह्यजगत् का कलाकार कहते हैं। प्रकृति-चित्रण में कालिदास अद्वितीय हैं। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन जैसा कालिदास ने किया है वैसा को अन्य कवि नहीं कर पाया है।

शास्त्रों ने प्रकृति को दो तरह का माना है एक तो वन, पर्वत, नदी आदि दृश्यमान पदार्थों के रूप में बाह्य प्रकृति तथा दूसरी ओर काम, क्रोध आदि प्रवृत्तियों से युक्त मानव की स्वभाव में निहित अन्तः प्रकृति। कालिदास ने अपनी रचनाओं में दोनों प्रकार की प्रकृतियों का संतुलन बनाए रखने के लिए दोनों का वर्णन बड़ी उदारता से किया है

कालिदास मनोभावों के सूक्ष्म पारखी हैं और जिस काव्य में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण सहज भाव से उभरता वही सरस काव्य बनता है और उसका कवि रससिद्ध बन जाता है। स्त्री-पुरुष के विविध मनोभावों का कवि को पूर्ण ज्ञान है तथा उसे व्यक्त करने के लिए कवि ने अभिधा शक्ति का प्रयोग न करके व्यञ्जना शक्ति का ही प्रयोग किया है। इससे उनकी कविता में और भी चमत्कार आ गया है।

यदि कवि के काव्य-कौशल के परिप्रेक्ष्य में उसकी सातों कृतियों का आकलन किया जाए तो कहा जा सकता है कि कवि का काव्य-चेतना का सर्वोत्तम निदर्शन मेघदूत है। है तो यह विरह-काव्य किन्तु आद्योपान्त विरह में मिलन लक्षित है। देश की भौगोलिक एकता के चित्र, प्राकृतिक और सांस्कृतिक चित्र, दिव्य शक्तियों के साथ मानव इच्छाओं के चित्र एक साथ बड़ी निपुणता से अभिव्यक्त किए गए हैं।